कपास नई खोज़

भा.कृ.अनु.प. – केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें : www.cicr.org.in

अंक: 3 खंड: 7 जूलाई 13–19, 2015

माननीय उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) भा.कृ.अ.प-के.क.अ.सं., ने क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबटूर का दौरा किया

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के माननीय उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) ने दि. 15 जुलाई, 2015 को केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबटूर का दौरा किया । बैठक डॉ.अ.हि.प्रकाश, परियाजना समन्वयक एवं अध्यक्ष (कपास सुधार) द्वारा प्रस्तावित एक औपचारिक स्वागत भाषण के साथ शुरू हुई । पूर्व सहायक महानिदेशक (वाणिज्यिक फसलों) डॉ. एन. गोपालकृष्णन ने माननीय उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) एवं भा.कृ.अ.प-गन्ना प्रजनन संस्थान के निदेशक का परिचय वैज्ञानिकों के लिए कराया । तब उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) ने केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबटूर के सभी वैज्ञानिकों के साथ उनके योगदान, चल रहे अनुसंधान परियोजनाओं और गतिविधियों के बारे में बातचीत की । बैठक डॉ. (श्रीमती) एस. उषा रानी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबटूर द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संपन्न हुई ।

केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, सिर्सा कपास उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करता है

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिर्सा द्वारा कपास उत्पादन प्रौद्योगिकी पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम दि. 16.7.2015 को बेहतर कपास पहल (बी.सी.आई), भारत के सहयोग से आयोजित किया गया जिसमें 65 प्रतिभागियों (अंबुजा फाउंडेशन, ट्रिडेन्ट, वर्धमान एवं श्री. रतन टाटा से हरित क्रांति सेल का पुनरुद्धार ट्रस्ट के कर्मचारी सदस्यों प्रगतिशील किसानों सहित) ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया । श्री. राजीव बारुहा ने बी.सी.आई का प्रतिनिधित्व किया । प्रतिभागियों को कपास कृषि विज्ञान, संकर बीज प्रबंधन एवं कपास कीट और रोग प्रबंधन के नवीनतम तकनीकी जानकारी के संबंध में अवगत कराया गया । डॉ. डी. मोंगा, अध्यक्ष, के.क.अ.सं., सिर्सा ने रोग प्रबंधन पर, डॉ. आर.ए मीणा, ने संकर बीज उत्पादन पर डॉ. ऋषि कुमार ने आई.पी.एम पर और डॉ. अनिल मेहता, सी.सी.एस.एच.ए.यू ने कपास की फसल में कृषि प्रथाओं पर एक व्याख्यान दिया । प्रतिभागियों ने केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिर्सा द्वारा आयोजित एच.डी.पी.एस के विभिन्न प्रदर्शनों और परीक्षणों का दौरा किया ।

फोटो: केन्द्राध्यक्ष डॉ० डी मौंगा किसानों को सम्बोधित करते हुए।

फोटो: डॉ० ऋषि किसानों को फार्म प्रक्षेत्रों की जानकारी देते हुए।

एकीकृत कीट प्रबंधन पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिर्सा द्वारा दि. 17.7.2015 को आयोजन किया गया जिसमें 55 प्रतिभागियों (राज्य कृषि विभाग के कर्मचारी सदस्यों, सिर्सा) ने भाग लिया । प्रतिभागियों को कपास में एकीकृत कीट प्रबंधन के नवीनतम प्रौद्योगिकीय जानकारी के बारे में अवगत कराया गया एवं डॉ. ऋषि कुमार, प्रधान वैज्ञानिक (कृषि कीट-विज्ञान) द्वारा सफेद मक्की पर एक विशेष सत्र था । प्रतिभागियों ने केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिर्सा द्वारा आयोजित एच.डी.पी.एस के विभिन्न प्रदर्शनों और परीक्षणों का दौरा किया ।

बैठकों

डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं., नागपुर, डॉ. संध्या क्रांति,प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, डॉ. डी.ब्लैस, प्रधान, फसल उत्पादन, डॉ. सुमन बाला सिंह, प्रधान, फसल सुधार विभाग डॉ. एम. वी.वेणुगेपालन, प्रधान, पी.एम.ई., ने दि. 13.7.2015 को आयोजित विदर्भ इंडस्ट्रीज एसोसिएशन, नागपुर में हुआ कपास सहयोगात्मक परियोजना के कार्यक्रम में भाग लिया । डॉ.सी.डी.माई, अध्यक्ष, आय.एस.सी.आय., डॉ. के.आर क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं., एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति ने सभा में संबोधित किया ।

डॉ.डी.ब्लैस, प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, डॉ.एम.एस.यादव, सी.टी.ओ एवं.श्री.नंदन्कर ने केंद्रीय मध्य रेलवे अस्पताल, नागपुर के समिति हॉल में "नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति " द्वारा आयोजित पहली बैठक में दि. 14.7.2015 को भाग लिया ।

अन्य गतिविधियॉ

डॉ. एस.माणिक्कम, प्रधान वैज्ञानिक (पौधा प्रजनन) ने भारतीय पौधा प्रजनक समाज के अंतर्गत, पौधा प्रजनन के इलेक्ट्रॉनिक जर्नल की खंड संपादक के रूप में कपास पर निम्न पांडुलिपियों की समीक्षा की और उन्ही के प्रकाशन के लिए टिप्पणियां भेजा ।

- टेट्राप्लोइड कपास में (जी.हिर्सूटम और जी. एल.बार्बडेन्स एल.)भिन्नाश्रय और संयोजन की क्षमता विश्लेषण ।
- चार अपलैंड कपास संकर (जी.हिर्सूटम एल) में पीढ़ी के औसत विश्लेषण के माध्यम से उपज और उसके घटकों के आनुवंशिक मापदंडों का आकलन ।
- अपलैंड कपास में (जी.हिर्सूटम एल) बहुभिन्नरूपी विश्लेषण ।

डॉ. एस.माणिक्कम, प्रधान वैज्ञानिक (पौधा प्रजनन) को संकायाध्यक्ष, कृषि कॉलेज एवं अनुसंधान संस्थान, किल्लीकुलम, तमितलाडू कृषि विश्वविद्यायय, कोयंबत्तूर द्वारा एम.एस.सी. (कृषि) के थीसिस "देसी कपास में कपास की उपज और घटक का लक्षण के आनुवंशिक विश्लेषण" के मूल्यांकन के लिए बाहरी परीक्षक के रूप में मनोनीत किया गया । उन्होंने गुण-दोष की दृष्टि से थीसिस का मूल्यांकन किया और शैक्षिक उपाधि की सिफारिश की ।

सम्मान

श्री. पी.चिदंबरम, कुशल सहायक कर्मचारी, के.क.अ.सं., क्षेत्रीय केन्द्र, ने भा.कृ.अ.प के वर्ष 2014 का पुरस्कार - सर्वश्रेष्ठ कुशल सहायक कर्मचारी श्रेणी के तहत जीता । वे दि. 25 जूलाई, 2015 को गांधी मैदान, के पास कृष्णा सभागार, पटना में आयोजित किया जानेवाला पुरस्कार समारोह – 2015 के दौरान पुरस्कार प्राप्त करेंगे ।

CityBusiness

TheHitavada
NAGPUR ■ Tuesday ■ July 14 ■ 2015

'Cotton collaborative project to change fortune of farmers'

■ Business Bureau

Anil Futane

P D Patodia addressing the gathering. Also seen are Prashant Mohota, Raju Patodia, Suresh Kotak, Vijay Ghawate, C D Mayee, K R Kranthi, S Ajane and M B Lal at the programme.

IN ORDER to scale up cotton production by adopting new techniques in cultivation to enhance yield, production and improve quality, a grand project, which has been tested over time, is being implemented in Vidarbha.

"This will be a golden opportunity for the cotton growers as they can increase their yield per hectare using high density planting concept thereby changing their fortunes," said P D Patodia, Chairman of the Standing Committee on Cotton and Confederation of Indian Textile Industry (CITI), while speaking at the inauguration of the Cotton Collaborative Project at VIA on Monday. He said that the Cotton Collaborative Project was being implemented in association with CITI-CDRA, the Government of Maharashtra, the Department of Agriculture, the Maharashtra Mofussil Mills Association and the Bayer Crop Sciences.

Patodia emphasised that the Cotton Development Research Association (CDRA) had successfully implemented similar projects in rain-dependent areas of southern and central Rajasthan for the past seven years. From a production of less than 1.7 lakh bales in 2007-08 to 10.25 lakh bales in 2014-15 was indeed a commendable achievement. In monetary terms this increase in production worked out to about Rs 1,500 crore benefit to cotton growers in Rajasthan. The yield in Rajasthan, which was 415 kilograms of lint in 2007-08, had reached 785 kilograms of lint per hectare (around 9 lakh bales) in 2008-09.

To cope up with the increase in cotton production, 27 ginning and pressing mills were set up providing employment opportunities to the people in that area.

"We had the full support from the State Agriculture Department, the technical assistance provided by scientists from Krishi Vigyan Kendras and agriculture research stations and also scientists from Bayer Crop Sciences," he noted.

He highlighted that the Rajasthan project was started in 2008-09 and the local textile industry was sourcing its cotton requirements from the neighbouring states like Gujarat, Maharashtra and Andhra Pradesh to the extent of 80 per cent. Today, the situation had changed and only 10 to 20 per cent of the cotton requirement was being met from these states.

Furthermore, the Government of Maharashtra had planned to develop Amravati as a textile hub. With the availability of cotton in adequate quantity in the neighbouring districts of Wardha, Yavatmal, Nagpur, Akola and Amravati, the textile activities in these areas were expected to get a big boost.

"We understand that the productivity in these areas was only 250 kilograms per hectare. It was in this context that the CDRA decided to replicate the Rajasthan experiment in the cotton-rich Vidarbha region. To start with, the project will be implemented in Wardha district and in due course of time, will be extended in a phased manner to other districts," he added.

Prashant Mohota, MD of Ginatex Limited, Hinganghat, introduced the speakers and said that a committee had been formed and the Government of Maharashtra would be appointing a nodal officer.

Raju Patodia, President of Maharashtra Mofussil Mills Association, Suresh Kotak, Chairman of ISCI, Vijay Ghawate, Joint Commissioner, Department of Agriculture, C D Mayee, President of ISCI, K R Kranthi, Head of CICR, Nagpur, S Ajane, Joint Commissioner, Department of Agriculture and M B Lal, Past Chairman of TMC Mission on Cotton and large number of officers from the Agriculture Department, representatives of trade and industry, ginning and pressing factories and others were present during the inaugural programme.

लोकमत 17 वीं जुलाई 2015

रेल्वेच्या राजभाषा कार्यान्वयन समितीची बैठक

हिंदीतून कामकाजाचे आवाहन : विविध स्पर्धाचे आयोजन

राजभाषा समितीच्या बैठकीला उपस्थित डावीकडून एअरपोर्ट अथॉरिटीचे संचालक रोशन कांबळे, केंद्रीय कापूस अनुसंधान संस्थानचे प्रमुख डॉ. डिसुजा, डीआरएम आलोक कंसल, नीरीचे डॉ. सतीश घटे, 'एडीआरएम' एस. के. गुप्ता.

नागपूर : दक्षिण पूर्व मध्य रेल्वेच्या नागपूर विभागातील नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितीची सहामाही बैठक मध्य रेल्वे रुग्णालयाच्या सभागृहात 'डीआरएम' आलोक कंसल यांच्या अध्यक्षतेखाली आयोजित करण्यात आली.

बैठकीला नीरीचे संचालक डॉ. सतीश घटे, एअरपोर्ट अथॉरिटीचे संचालक रोशन कांबळे, केंद्रीय कापूस अनुसंधान संस्थानचे प्रमुख डॉ. डी. डिसुजा, अप्पर रेल्वे विभागीय व्यवस्थापक एस. के. गुप्ता उपस्थित होते. यावेळी समितीतर्फे प्रकाशित करण्यात येणाऱ्या हिंदी पत्रिकेचे नाव राज नाग एक्स्प्रेस ठेवण्यात आले. नीरीचे संचालक डॉ. सतीश घटे यांनी विविध हिंदी कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यासाठी प्रोत्साहन दिले. एअरपोर्ट अथॉरिटीचे संचालक रोशन कांबळे यांनी कार्यालयीन पत्रव्यवहार हिंदीतून करण्याची सूचना केली. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितीचे अध्यक्ष आलोक कंसल यांनी सर्व केंद्रीय कार्यालयात हिंदीचा प्रचार-प्रसार करण्यासाठी एकमेकांची मदत घेण्याचा सल्ला दिला. संचालन आर. के. दास यांनी केले. आभार अप्पर विभागीय रेल्वे व्यवस्थापक एस. के. गुप्ता यांनी मानले. (प्रतिनिधी)

निर्मित एवं प्रकाशित: डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर
प्रमुख संपादक: डॉ. एस. एम. वास्निक
संपादकों: डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम. शरवणन
जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रुपांकन: डॉ. एम. सबेष एवं श्री. एस. सत्यकुमार
हिन्दी अनुवाद: श्रीमति. के. सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश
प्रमाण: कपास नई खोज, अंक – **3**, खंड – **7, 2015**, भा.कृ.अनु.प. – केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन http://www.cicr.org.in/News Letter.html में उपलब्ध है।
कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रोड, नागपुर- 441 108.
दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com